की जगह नहीं। एक-एक गज पर बिजली की राड और झण्ड़े, सारा मैदान दुल्हन की तरह सजाया गया था। पण्डित जी को 15 सेर फूलों की भारी-भरकम माला पहनाकर स्वागत किया गया। पण्डित जी का अध्यक्षीय भाषण अविस्मरणीय एवं अभूतपूर्व था। उन्होंने कार्यकर्ताओं को प्रेरणा और नई दिशा तो उस भाषण के द्वारा दी ही, देश की किसी भी ज्वलन्त समस्या को उन्होंने नहीं छोड़ा, जिस पर अपने विचार प्रस्तुत कर समस्या का निदान न किया हो। कुछ प्रमुख कम्युनिस्ट नेताओं ने इसी सभा में अपना नाता जनसंघ से जोड़ा, पर दैव को शायद यह सब सहन न हो सका। जनसंघ की अग्नि-परीक्षा शायद अभी पूरी नहीं हुई थी और अधिकांश लोगों को पण्डित जी के यह अन्तिम दर्शन थे।

महामानव की महायात्रा

दिनांक 11 फरवरी को सायंकाल पण्डित जी ने लखनऊ से पटना के लिए रेल द्वारा प्रथम श्रेणी के डिब्बे में प्रस्थान किया, परन्तु वे गंतव्य पर नहीं पहुंचे। उनका डिब्बा खाली था और सामान गायब। प्रात:काल 12 फरवरी को सारे विश्व ने सुना कि पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी की रेलगाड़ी में हत्या कर दी गयी। और उनका शव मुगलसराय के रेलवे यार्ड में पटरी के किनारे पड़ा हुआ पाया गया। सारा भारत सिसक उठा, गृहिणियों ने जलते हुए चूल्हों में पानी डाल दिया। भारत के कोने-कोने में पण्डित जी के व्यक्तिगत निकट सम्पर्क में आये लाखों आबाल, वृद्ध, नर-नारी, संयम न रख सके और फूट-फूट कर रो पड़े।

जिसके लिए भी संभव हो सका, वह मुगलसराय की ओर दौड़ पड़ा। पण्डित जी का शव विमान द्वारा दिल्ली ले जाया गया। वहां उन्हें अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। न तो वे प्रशासन से सम्बन्धित थे, न सांसद, न मंत्री परन्तु अपने प्रकार के वे अकेले व्यक्ति थे जिनके शव पर राष्ट्रपति श्री जाकिर हुसैन, प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी तथा दिल्ली में उपस्थित सभी बड़े राजनैतिक नेताओं ने पुष्प माला डालकर श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यकर्ताओं का तो कुछ कहना ही नहीं था, कितने कार्यकर्ताओं ने अपने श्रद्धा सुमन चढ़ाये उसकी कोई गिनती नहीं कर सका। सायंकाल जिस मिट्टी ने उन्हें जन्म दिया था, उसी धरती मां की गोद में, उनकी चिता को अग्नि देकर उनके पंचभूत शरीर को सदा-सदा के लिए पंचतत्व में विलीन कर दिया गया और भारत के राजनैतिक क्षितिज का महान तपस्वी, राजनीतिज्ञों का आदर्श, जन-जन का चेहता, ज्योति नक्षत्र का प्रकाशमान ध्रुव तारा सदा-सदा के लिए ब्रह्मांड के गहन अन्धकार में विलीन हो गया।